

जीवन-सह-साहित्यिक परिचय

लेखक - अनुपम मिश्र

जन्म - सन् 1948, वर्धा (महाराष्ट्र)

माता - सरला मिश्र

पिता - भवानी प्रसाद मिश्र (प्रसिद्ध हिन्दी कवि)

निधन - 19 दिसम्बर, 2016

रचनाएँ - पर्यावरण संबंधी लगभग बीस पुस्तकों का निर्माण जिनमें 'आज भी खरे हैं तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूँदें' विशेष रूप से चर्चित रहीं।

प्रमुख सम्मान- 'आज भी खरे हैं तालाब' के लिए 2011 में उन्हें देश के प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अनुपम मिश्र ने इस किताब को शुरू से ही कॉपीराइट से मुक्त रखा है।

सन् 1996 में उन्हें देश के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

2007-2008 में उन्हें मध्य प्रदेश सरकार के चंद्रशेखर आज़ाद राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इन्हें एक लाख रुपये के कृष्ण बलदेव वैद पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

रचनात्मक विशेषताएँ - अनुपम मिश्र जाने माने लेखक, संपादक, छायाकार और गांधीवादी पर्यावरणविद् थे। उनके प्रयासों से सूखाग्रस्त क्षेत्रों में शुमार अलवर में जल संरक्षण का कार्य किया गया। अरवरी नदी को पुनर्जीवित करने में उनका प्रयास सराहनीय है। पर्यावरण-संरक्षण के प्रति जनचेतना जगाने और सरकारों का ध्यान आकर्षित करने की दिशा में वे तब से काम कर रहे थे, जब देश में पर्यावरण रक्षा का कोई विभाग नहीं खुला था। शुरुआत में बिना सरकारी मदद के इन्होंने देश और दुनिया के पर्यावरण की जिस तल्लीनता और बारीकी से खोज-खबर ली है, वह कई सरकारों, विभागों और परियोजनाओं के लिए भी संभवतः संभव नहीं हो पाया है। इनके प्रयास से सूखाग्रस्त अलवर में जल संरक्षण का काम शुरू हुआ था जिसे दुनिया ने देखा और खूब सराहा। सूख चुकी अरवरी नदी के पुनर्जीवन में उनकी कोशिश काबिले तारीफ रही है। इतना ही नहीं इन्होंने उत्तराखण्ड और राजस्थान के लापोड़िया में परंपरागत जल स्रोतों के पुनर्जीवन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

गांधी शांति प्रतिष्ठान दिल्ली में इन्होंने पर्यावरण कक्षा की स्थापना की। वह इस प्रतिष्ठान की पत्रिका 'गाँधी मार्ग' के संस्थापक और संपादक भी थे। चंडी प्रसाद भट्ट के साथ काम करते हुए इन्होंने उत्तराखण्ड के 'चिपको आंदोलन' में जंगलों को बचाने के लिये सहयोग किया था। वह जल-संरक्षक राजेन्द्र सिंह की संस्था 'तरुण भारत संघ' के लंबे समय तक अध्यक्ष

रहे। २००९ में इन्होंने टेड (टेक्नोलॉजी एंटरटेनमेंट एंड डिजाइन) द्वारा आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित किया था।

पाठ-परिचय

'राजस्थान की रजत बूँदें' पाठ अनुपम मिश्र द्वारा लिखा गया है। यह रचना राजस्थान की जल-समस्या का समाधान मात्र नहीं है, बल्कि यह जमीन की अतल गहराइयों में जीवन की पहचान भी है। इसमें राजस्थान के मरुस्थल में पाई जाने वाली कुँई के बारे में बताया गया है जिसका उपयोग पानी संग्रहण के लिए किया जाता है। लेखक राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्रोत कुँई का वर्णन करता है। वे बताते हैं कि कुँई खोदने काम चेलवांजी करते हैं। वे बसौली से खुदाई करते हैं जो छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है। अंदर भयंकर गर्मी रहती है। गर्मी कम करने के लिए बाहर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठीभर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकते हैं। इससे ताजी हवा अंदर आती है और गहराई में जमा दमघौंटू गर्म हवा बाहर निकलती है। चेलवांजी सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का बर्तन टोप की तरह पहनते हैं, ताकि चोट न लगे। थोड़ी खुदाई होने पर इकट्ठा हुआ मलबा बाल्टी से बाहर निकाला जाता है। चेलवांजी कुँई की खुदाई व चिनाई करने वाले दक्षतम लोग होते हैं। कुँई कुँई से व्यास में छोटी होती है, परंतु गहराई कम नहीं होती। कुँई वर्षा के जल को बड़े विचित्र ढंग से समेटती है- तब भी जब वर्षा ही नहीं होती। यानी कुँई में न तो सतह पर बहने वाला पानी है और न भूजल।

मरुभूमि में रेत का विस्तार और गहराई अथाह है। यहाँ पर कहीं-कहीं रेत की सतह के पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी मिलती है। कुँई का पानी खारा होने के कारण पीने के काम नहीं आ सकता। इसी कारण कुँईयाँ बनाने की आवश्यकता होती है। यह पानी अमृत के समान मीठा होता है। मरुभूमि में जल को तीन रूपों में बांटा गया है- पालर पानी 2. पाताल पानी 3. रेजाणी पानी।

पालरपानी यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी, बारिश का जल जो बहकर नदी, तालाबों आदि में एकत्रित होता है। दूसरा रूप है पातालपानी - यह वही भूजल है जो हमें कुँई, ट्यूबवेल द्वारा प्राप्त होता है। तीसरा रूप है - रेजाणी पानी - वह बारिश का पानी जो रेत के नीचे जाता तो है, लेकिन खड़िया मिट्टी के कारण भूजल से नहीं मिल पाता व नमी के रूप में समा जाता है।

वर्षा की मात्रा नापने के लिए 'रेजा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। रेजाणी पानी खड़िया पट्टी के कारण पाताल पानी से अलग बना रहता है। इस पट्टी के न होने कारण से रेजाणी पानी और पातालपानी खारा हो जाता है। रेजाणीपानी को सहेजने के लिए कुँई का निर्माण होता है।

कुँई निर्माण के बाद उत्सव महोत्सव मनाया जाता है। चेजारो को राजस्थान में विशेष दर्जा प्राप्त था। चेलवांजी को विदाई के समाय उन्हें अलग-अलग तरह की भेंट दी जाती थी। उसके

बाद भी उनका रिश्ता गाँव से जुड़ा रहता था। तीज-त्योहारों और विवाह जैसे मांगलिक कार्यों पर भेंट दी जाती थी। फसल आने पर खलिहान का एक हिस्सा उनके लिए रखा जाता था। लेकिन आज के समय में उन्हें वो सम्मान नहीं दिया जाता है उनसे बस एक मजदूर की तरह काम करवाया जाता है।

कुई का मुँह छोटा रखा जाता है। पानी निकालने के लिए छोटी चड़स का उपयोग किया जाता है यदि कोई गहरी हो तो पानी खींचने के लिए गिनी या चकरी भी लगाई जाती है यह गरेड़ी, चरखी या फरेड़ी कहलाती है। कुई से दिन-भर में मिलाकर बस तीन-चार घड़ा मीठा पानी ही निकाला जा सकता है। खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े क्षेत्र में से गुजरती है यही कारण है कि कुई लगभग प्रत्येक घर में मिल जाती है।

राजस्थान में खड़िया पत्थर की पट्टी पर ही कुइयों का निर्माण किया जाता है। कुई का निर्माण ग्राम समाज की सार्वजनिक जमीन पर होता है, परंतु उसे बनाने और उसे पानी लेने का हक उसका अपना हक होता है। सार्वजनिक जमीन पर बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है। इसी नमी से साल भर कुइयों में पानी भरता है। नमी की मात्रा वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो जाती है। इसलिए उसे क्षेत्र में हर नई कुई का अर्थ है- पहले से तय नमी का बँटवारा। इस कारण निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। बहुत जरूरत पड़ने पर ही समाज नई कुई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

रेत के नीचे हर जगह खड़िया की पट्टी नहीं मिलती, इसलिए कुई भी पूरे राजस्थान में नहीं मिलती। चुरु, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर में खड़िया पत्थर की पट्टी पाई जाती है इसलिए यहाँ हर घर में कुई पाया जाता है। इस प्रकार से राजस्थान में कुई खड़िया पट्टी के बल पर खारे पानी के बीच मीठे पानी का मधुर स्रोत है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

1. राजस्थान में कुई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है ?

उत्तर:- राजस्थान में अथाह रेत होने के कारण वर्षा का पानी रेत में समा जाता है; जिससे नीचे की सतह पर नमी फैल जाती है। यही नमी खड़िया मिट्टी की परत के ऊपर तक रहती है। इस नमी को पानी के रूप में बदलने के लिए चार-पाँच हाथ के व्यास की जगह को तीस से पैंतीस हाथ की गहराई तक खोदा जाता है। खुदाई के साथ-साथ चिनाई भी की जाती है। इस चिनाई के बाद खड़िया की पट्टी पर रिस-रिस कर पानी एकत्र हो जाता है; इसी तंग और गहरी जगह को कुई कहा जाता है। यह कुएँ का स्त्रीलिंग रूप है। कुई केवल व्यास में कुएँ के व्यास से छोटी होती है परंतु गहराई में लगभग समान होती है। इसका मुँह इसलिए छोटा रखा जाता है क्योंकि यदि कुई का व्यास बड़ा होगा तो उसमें कम मात्रा का पानी ज्यादा फैल जाएगा और तब उसे ऊपर निकलना कठिन होगा।

2. दिनोंदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह

पाठ आपकी कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं? जानें और लिखें।

उत्तर:- दिनोंदिन पानी की समस्या विकराल रूप ले रही है। मानव की प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण पानी की समस्या भयंकर होती जा रही है। नदियों का जल-स्तर घटता जा रहा है। सभी जगहों में लोग पानी की कमी से जूझ रहे हैं। ऐसे वातावरण में 'राजस्थान की रजत बूँदें' पाठ से हमें जल प्राप्ति के अन्य उपायों और पानी के समचित प्रयोग पर विचार करने में मदद करता है। देश के अन्य भागों में पानी की समस्या से निपटने के लिए कई सरकारी और गैर सरकारी अभियान चलाए जा रहे हैं। लोगों को प्रिंट-मीडिया, विज्ञापन, कार्यक्रमों, सिने जगत की हस्तियों द्वारा पानी के कमी के विषय में अवगत करवाया जा रहा है। गाँवों और शहरों में वर्षा के पानी के बचाव के कई उपाय किए जा रहे हैं। हमें प्रकृति के उपहार वर्षा के जल का संग्रहण करना चाहिए। इसके लिए गाँव-गाँव में तालाबों का पुर्ननिर्माण किया जा रहा है। छोटे कुएँ, बावड़ियों और जलाशयों का निर्माण कर पानी के भूमिगत जल-स्तर को बढ़ाया जा रहा है। अब वर्षा के जल के संचयन की आवश्यकता है। यदि ये सब उपाय अपनाए जाएँ तो ही इस समस्या से निपटा जा सकता है। इसलिए हमें वर्षा की बूँद बूँद पानी का उचित संग्रहण और इस्तेमाल करना चाहिए।

3. चेजारों के साथ गाँव-समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फ़र्क आया है? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर:- 'कुई निर्माण के दक्ष चिनाई करने वाले कारीगर' को चेजारों कहा जाता है। राजस्थान में पहले चेजारों को विशेष सम्मान प्राप्त था। कुई बन जाने पर एक विशेष उत्सव का आयोजन किया जाता था; तब चेजारों को विदाई के समय तरह-तरह की भेंट दी जाती थी। इसके बाद भी इनका रिश्ता गाँव से बना रहता था; आच प्रथा के अनुसार उन्हें तीज- त्योहारों तथा शादी-विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर भी भेंट दी जाती थी। फसल आने पर खलिहान में उनके नाम से अनाज का एक ढेर अलग से निकाला जाता था। समयानुसार अब स्थिति में परिवर्तन आ चुका है। आज उन्हें पहले जैसा सम्मान नहीं दिया जाता; सिर्फ मजदूरी देकर काम करवाया जाता है।

4. निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुइयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर:- लेखक के अनुसार राजस्थान में खड़िया पत्थर की पट्टी पर ही कुइयों का निर्माण किया जाता है। कुई का निर्माण ग्राम-समाज की सार्वजनिक जमीन पर होता है। हर ग्रामीण की अपनी-अपनी कुई होती है परंतु उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। फिर भी इस क्षेत्र में बनी कुई गाँव-समाज की सार्वजनिक संपत्ति मानी जाती है। इसका कारण यह है कि उस जगह बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है। इसी नमी से साल-भर कुइयों में पानी भरता है। राजस्थान के लोग जानते हैं की भूमि के अंदर मौजूद नमी को ही कुई के

द्वारा पानी के रूप में प्राप्त किया जाता है। नमी की मात्रा वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो जाती है। अतः उस क्षेत्र में हर नई कुई का अर्थ है-पहले से तय नमी का बँटवारा। इस कारण निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। यदि यह अंकुश न रहे तो लोग प्रत्येक घर में कुई बना लेंगे और सबको पानी नहीं मिल पाएगा। बहुत अधिक आवश्यकता पड़ने पर ही समाज नई कुई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

5. कुई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें - पालर पानी, पाताल पानी, रेजाणी पानी।

उत्तर:- राजस्थान में कुई बनाए जाने वाले क्षेत्र में पानी को तीन रूपों में बाँटा गया है - पालरपानी, पातालपानी और रेजाणीपानी।

1. पालरपानी - पालर पानी यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी। वर्षा का यह जल जो धरातल पर बहता है और इसे नदी, तालाब आदि में रोका जाता है। इस पानी का वाष्पीकरण जल्दी होता है।
2. पाताल पानी - जो वर्षा जल जमीन में नीचे जाकर 'भूजल' में मिल जाता है। वह कुओं/ट्यूबवैल आदि द्वारा हमें प्राप्त होता है।
3. रेजाणी पानी - वह वर्षा जल जो रेत के नीचे जाता तो है, परन्तु खड़िया मिट्टी के परत के कारण भूजल से नहीं मिल पाता व नमी के रूप में रेत में समा जाता है, जो कुई द्वारा प्राप्त किया जाता है। अर्थात् यह पानी धरातल से नीचे उतरता है परन्तु पाताल में नहीं मिलता है यह पालरपानी और पातालपानी के बीच का है। वर्षा जल को मापने के लिए 'रेजा' शब्द का प्रयोग होता है और रेजा के माप का अर्थ 'धरातल' में समाई वर्षा' के माप से है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. 'राजस्थान की रजत बूँदें' के रचनाकार हैं -
क. अनुपम मिश्र ख. अनुज तुगुन
ग. अनीता वर्मा घ. अनुकृति शर्मा
2. लेखक अनुपम मिश्र किन आन्दोलनों से घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं?
क. पर्यावरण संबंधी
ख. नारी सशक्तिकरण संबंधी
ग. राजनीति संबंधी
घ. समाज संबंधी
3. खारे पानी के सागर में अमृत जैसा मीठा पानी प्राप्त करने के लिए मरुभूमि के समाज ने अपने अनुभवों को व्यवहार में उतारने का पूरा एक शास्त्र विकसित किया है जिसने राजस्थान में उपलब्ध पानी को कितने रूपों में बाँटा है?
क. दो ख. तीन

ग. चार घ. पांच

4. 'राजस्थान की रजत बूँदें' लेख के अनुसार सीधे बरसात से मिलने वाला पानी क्या कहलाता है?
क. रेजाणीपानी ख. पातालपानी
ग. पालर पानी घ. इनमें से कोई नहीं
5. 'राजस्थान की रजत बूँदें' लेख के अनुसार जो भूजल कुओं से निकाला जाता है, उसे क्या कहते हैं?
क. पातालपानी ख. पालर पानी
ग. रेजाणी पानी घ. खारापानी
6. 'राजस्थान की रजत बूँदें' लेख के अनुसार धरातल के नीचे उतरा पर पाताल में ना मिल पाने वाला पानी कहलाता है-
क. पालरपानी ख. पातालपानी
ग. रेजाणीपानी घ. मीठा पानी
7. राजस्थान में वर्षा की मात्रा नापने में इंच या सेंटीमीटर के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग होता है ?
क. रेजाणी ख. रेजा
ग. राजा घ. रोजा
8. राजस्थान में कुई खोदने वाला क्या कहलाता है?
क. चेजारो ख. चेजरा
ग. रजरा घ. चेजो
9. चेजो अर्थात् चिनाई का श्रेष्ठतम काम किसका प्राण है?
क. चेजारो का ख. कुँआ का
ग. कुई का घ. चेलवांजी का
10. कुई खोदने वाले को किस प्रथा के अंतर्गत वर्षभर सम्मानित किया जाता है ?
क. अच प्रथा ख. आच प्रथा
ग. ओच प्रथा घ. आज प्रथा
11. राजस्थान के किस जिले के अनेक गाँवों में पालीवाल ब्राह्मणों और मेघवालों के हाथों से सौ-दो सौ बरस पहले बनी कुइयाँ या पार आज भी बिना थके पानी जुटा रही हैं?
क. बीकानेर ख. बाड़मेर
ग. अजमेर घ. जैसलमेर
12. गहरी कुई से पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर लगी घिरनी को राजस्थान में क्या कहा जाता है?
क. गरेड़ी ख. चरखी
ग. फरेड़ी घ. ये सभी
13. पालर पानी किसे कहते हैं ?
क. भूजल
ख. बरसात से मिलने वाला पानी
ग. खड़िया पट्टी का पानी
घ. नल का पानी
14. कुई को रस्से से बाँधने की क्रिया को क्या कहते हैं?
क. बंधन ख. चिनाई
ग. चेजा घ. जोड़ाई
15. 'राजस्थान की रजत बूँदें' नामक पाठ के लेखक हैं-

- क. कुमार गंधर्व ख. बेबी हालदार
ग. अनुपम मिश्र घ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
16. कुई की कितनी गहरी खुदाई हो चुकी थी?
क. बीस-तीस हाथ ख. तीस-पैंतीस हाथ
ग. पच्चीस-तीस हाथ घ. पंद्रह-बीस हाथ
17. 'कुई' शब्द से तात्पर्य है-
क. खुला स्थान ख. गहरा स्थान
ग. छोटा-सा कुआँ घ. गहरा कुआँ
18. कुई की खुदाई किससे की जाती है?
क. फावड़े से ख. हत्थी से
ग. दरांती से घ. बसौली से
19. चेलवांजी अपने सिर पर किस प्रकार का टोप पहनते हैं?
क. काँसे का
ख. पीतल का
ग. किसी अन्य धातु का
घ. उपरोक्त में से कोई एक
20. 'चेलवांजी' का शाब्दिक अर्थ है-
क. चेजारो ख. निहारो
ग. पुचकारो घ. मिथारो
21. कुई की गरमी कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग मुट्ठी भर-भरकर नीचे क्या फेंकते हैं?
क. रेत ख. पानी
ग. टोप घ. रस्सी
22. बड़े कुँआँ में पानी कितनी गहराई पर निकलता है?
क. डेढ़ सौ-दो सौ हाथ ख. दो सौ-तीन सौ हाथ
ग. सौ-दो सौ हाथ घ. तीन सौ-चार सौ हाथ
23. बड़े कुँआँ के पानी का स्वाद कैसा होता है?
क. मीठा ख. नमकीन
ग. कडुवा घ. खारा
24. मरुभूमि के विकसित किए गए समाज ने वहाँ उपलब्ध पानी को कितने रूपों में बाँटा है?
क. चार ख. पाँच
ग. सात घ. तीन
25. राजस्थान में पानी के रूप हैं -
क. पालर पानी ख. पाताल पानी
ग. रेजाणी पानी घ. उपरोक्त सभी
26. वर्षा की मात्रा नापने के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है?
क. पट्टी ख. इंच
ग. सेंटीमीटर घ. रेजा
27. पाँच हाथ के व्यास की कुई में रस्से की एक ही कुंडली का केवल एक घेरा बनाने के लिए लगभग कितना लंबा रस्सा चाहिए?
क. पंद्रह हाथ ख. बीस हाथ

- ग. पाँच हाथ घ. दस हाथ
28. कुई के पानी को साफ रखने के लिए उसे किस धातु के बने ढक्कन से ढका जाता है?
क. लोहा ख. पत्थर
ग. मिट्टी घ. लकड़ी
29. गहरी कुई से पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर लगी चकरी को क्या कहते हैं?
क. गरेड़ी ख. चरखी
ग. फरेड़ी घ. उपरोक्त सभी
30. जैसलमेर जिले के एक गाँव खड़ेरों की ढाणी को लोग किस नाम से जानते थे?
क. तीन-बीसी ख. पाँच बीसी
ग. छह-बीसी घ. दस-बीसी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

- 1.-क, 2.-क, 3.-ख, 4.-ग, 5.-क, 6.-ग,
7.-ख, 8.-क, 9.-ग, 10.-ख, 11.-घ, 12.-घ,
13.-ख, 14.-ख, 15.-ग, 16.-ख, 17.-ग, 18.-घ,
19.-घ, 20.-क, 21.-क, 22.-क, 23.-घ, 24.-घ,
25.-घ, 26.-घ, 27.-क, 28.-घ, 29.-घ, 30.-ग,

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'राजस्थान की रजत बूँदे' पाठ में लेखक किसके निर्माण का जिक्र किया है?
उत्तर:- इस पाठ में राजस्थान में बनाई जाने वाली कुँइयों के निर्माण का जिक्र किया गया है।
2. बसौली क्या होती है?
उत्तर:- बसौली राज मिस्त्रियों का एक छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औज़ार होता है।
3. चेलवांजी अपने सिर की सुरक्षा के लिए क्या पहनते हैं?
उत्तर:- सुरक्षा की दृष्टि से चेलवांजी अपने सिर पर कांसे, पीतल या अन्य किसी धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं।
4. चेलवांजी कौन होते हैं?
उत्तर:- कुई की खुदाई और एक विशेष तरह की चिनाई में दक्ष मजदूरों को चेलवांजी यानी चेजारो कहते हैं।
5. कुई की चिनाई करने वाले काम को क्या कहा जाता है?
उत्तर:- कुई की चिनाई करने वाले काम को 'चेजा' कहा जाता है।
5. मरुस्थल के जल को किन तीन रूपों में बाँटा गया है?
उत्तर:- 1. पालर पानी, 2. पाताल पानी, 3. रेजाणी पानी।

6. सीधे बरसात से मिलने वाले पानी को क्या कहा जाता है ?
उत्तर:- पालर पानी।
7. पाताल पानी किसे कहते हैं?
उत्तर:- भूजल है जो कि कुंओं से प्राप्त किया जाता है।
8. मरूस्थल में वर्षा की मात्रा मापने के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?
उत्तर:- मरूस्थल में वर्षा की मात्रा मापने के लिए 'रेजा' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
9. कुई का मुंह छोटा क्यों रखा जाता है?
उत्तर:- कुई का मुंह छोटा रखा जाता है, क्योंकि रेत में जमी नमी से पानी की बूँदे बहुत धीरे-धीरे रिसती हैं।
10. राजस्थान में कुई कहाँ बनती हैं?
उत्तर:- राजस्थान में कुइयाँ गांव-समाज की सार्वजनिक जमीन पर बनती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कुई की खुदाई किससे की जाती है?
उत्तर:- कुई का व्यास या घेरा बहुत कम होता है। इसलिए इसकी खुदाई फावड़े या कुल्हाड़ी से नहीं की जा सकती। इसकी खुदाई 'बसौली' से की जाती है। बसौली छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है जिस पर लोहे का नुकीला फल तथा लकड़ी का हत्था लगा होता है।
2. खड़िया पत्थर की पट्टी कहाँ चलती है? खड़िया पट्टी के अलग-अलग क्या नाम हैं?
उत्तर:- मरुभूमि में रेत का विस्तार व गहराई अथाह है। यहाँ अधिक वर्षा भी हो तो वह भूमि में जल्दी जमा हो जाती है। कहीं-कहीं मरुभूमि में रेत की सतह के नीचे प्रायः दस-पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की एक पट्टी चलती है। यह पट्टी लंबी-चौड़ी होती है, परंतु रेत में दबी होने के कारण ऊपर से दिखाई नहीं देती है।
खड़िया पट्टी के कई स्थानों पर अलग-अलग नाम हैं। कहीं यह चारोली है तो कहीं धाधड़ो, धड़धड़ो, कहीं पर बिट्टू रो बल्लियों के नाम से भी जानी जाती है तो कहीं इस पट्टी का नाम केवल 'खड़ी' भी है।
3. कुई से पानी कैसे निकाला जाता है?
उत्तर:- कुई से पानी 'चड़स' के द्वारा निकाला जाता है। यह मोटे कपड़े या चमड़े की बनी होती है। इसके मुँह पर लोहे का वजनी कड़ा बँधा होता है। चड़स पानी से टकराता है तथा ऊपर का वजनी भाग नीचे के भाग पर गिरता है। इस तरह कम मात्रा के पानी में भी वह ठीक से डूब जाती है। भर जाने के बाद ऊपर उठते ही चड़स अपना पूरा आकार ले लेता है। आजकल ट्रकों की फटी ट्यूब से भी छोटी चड़सी बनने लगी है।
4. रेजाणीपानी की क्या विशेषता है? 'रेजा' शब्द का प्रयोग किसलिए किया जाता है?
उत्तर:- रेजाणीपानी, पालरपानी और पातालपानी के बीच पानी

का तीसरा रूप है। यह धरातल से नीचे उतरता है, परंतु पाताल में नहीं मिलता। इस पानी को कुई बनाकर ही प्राप्त किया जाता है।

'रेजा' शब्द का प्रयोग वर्षा की मात्रा नापने के लिए किया जाता है। यह माप धरातल में समाई वर्षा को नापता है। उदाहरण के लिए यदि मरुभूमि में वर्षा का पानी छह अंगुल रेत के भीतर समा जाए तो उस दिन की वर्षा को-पाँच अंगुल रेजा कहेंगे।

5. गहरी कुई से पानी खींचने का क्या प्रबंध किया जाता है?
उत्तर:- गहरी कुई से पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी लगाई जाती है। यह गरेड़ी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है। फरेड़ी लोहे की दो भुजाओं पर भी लगती है। लेकिन प्रायः यह गुलेल के आकार के एक मजबूत तने को काट कर, उसमें आर-पार छेद बनाकर लगाई जाती है। इसे ओड़ाक कहते हैं। ओड़ाक और चरखी के बिना गहरी व संकरी कुई से पानी निकालना कठिन काम होता है। ओड़ाक और चरखी चड़सी को यहाँ-वहाँ टकराए बिना सीधे ऊपर तक लाती है। इससे वजन खींचने में भी सुविधा रहती है।
6. गोधूलि के समय कुइयों पर कैसा वातावरण होता है?
उत्तर:- लेखक के अनुसार कुई की क्षमता दिनभर में बस दो-तीन घड़े मीठे पानी को जमा करने की है। इस पानी को निकालने के लिए गोधूलि बेला में प्रायः पूरा गाँव कुइयों पर आता है। उस समय मेला-सा लगता है। गाँव से सटे मैदान में तीस-चालीस कुइयों पर एक साथ घमती घिरनियों का स्वर गोचर से लौट रहे पशुओं की घंटियों और रंभाने की आवाज में समा जाता है। दो-तीन घड़े भर जाने पर डोल और रस्सियाँ समेट ली जाती हैं। कुइयो के ढक्कन वापस बंद कर दिए जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. "राजस्थान में जल संग्रह के लिए बनी कुई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है।" स्पष्ट करें।
उत्तर:- 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है'। यह कथन राजस्थान की कुई पर पूरी तरह से सत्य सिद्ध होता है। यह बात बिल्कुल सही है कि राजस्थान में जल-संग्रह के लिए बनी कुई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है। मरुभूमि में रेत का विस्तार और गहराई अथाह है। वहाँ वर्षा भी कम होती है। भूजल खारा होता है। ऐसी स्थिति में जल की खोज, उसे निकालना आदि सब कुछ वैज्ञानिक तरीके से हो सकता है। मरुभूमि के भीतर खड़िया की पट्टी को खोजने में भी पीढ़ियों का अनुभव काम आता है। जिस स्थान पर वर्षा का पानी एकदम न 'बैठे', उस स्थान पर खड़िया पट्टी पाई जाती है। कुई के जल को पाने के लिए मरुभूमि के समाज ने खूब मंथन किया तथा अनुभवों के आधार पर पूरा शास्त्र विकसित किया है। कुई खोदने में वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाई जाती है। कुई की खुदाई और एक विशेष तरह की चिनाई में दक्ष मजदूरों को चेलवांजी या चेजारो कहते हैं। चेजारो के सिर पर धातु का बर्तन उन्हें चोट से बचाता है। कुई की गहराई में चल रहे इस मेहनती

काम पर वहां की गर्मी का बहुत असर पड़ता है इसलिए गर्मी कम करने के लिए ऊपर ज़मीन पर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्टी भर रेत बहुत ज़ोर के साथ नीचे फेंकते हैं। ऊपर से रेत फेंकने से ताज़ी हवा नीचे जाती है तथा गर्म हवा बाहर निकलती है। चेजारो के कुई खोदते समय दमघौंट गर्मी से छुटकारा पाने के लिए ऊपर से रेत फेंकना भी तो एक विज्ञान ही है। इतना ही नहीं कुई की चिनाई जो पत्थर, ईंट, खीप की रस्सी या अरणी के लड्डों से की जाती है। यह खोज आधुनिक समाज को चमत्कृत करने वाली है। इस वैज्ञानिक खोज से जल की कमी को पूरा करने के लिए राजस्थान को आज पूरा देश आदर्श मान रहा है।

2. कुई की निर्माण-प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- मरुभूमि में कुई के निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजारो करते हैं। वे खुदाई व विशेष तरह की चिनाई करने में दक्ष होते हैं। कुई बनाना एक विशिष्ट कला है। चार-पाँच हाथ के व्यास की कुई को तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई तक उतारने वाले चेजारो कुशलता व सावधानीपूर्वक पूरी ऊँचाई नापते हैं। चिनाई में थोड़ी-सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी-थोड़ी खुदाई होती है, डोल से मलबा निकाला जाता है और फिर आगे की खुदाई रोककर अब तक हो चुके काम की चिनाई की जाती है ताकि मिट्टी धँसे नहीं। बीस-पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते-जाते गर्मी बढ़ती जाती है और हवा भी कम होने लगती है। तब ऊपर से मुट्टी-भर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है ताकि ऊपर की ताजा हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके। चेजारो सिर पर काँसे, पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़-पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी-किसी स्थान पर ईंट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुई को रस्से से 'बाँधा' जाता है। ऐसे स्थानों पर कुई खोदने के साथ-साथ खीप नामक घास का ढेर जमा कर लिया खुदाई शुरू होते ही तीन अंगुल मोटा रस्सा बनाया जाता है। एक दिन में करीब दस हाथ की गहरी खुदाई होती है। इसके तल पर दीवार के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहली दिनें जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच-बीच में जरूरत होने पर चिनाई भी की जाती है।

कहीं-कहीं न तो ज़्यादा पत्थर मिलता है और ना खीप ही। ऐसी जगहों पर भीतर की चिनाई लकड़ी के लंबे लड्डों से की जाती है लड्डे अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। इस काम के लिए सबसे अच्छी लकड़ी अरणी की मानी जाती है, परंतु इन पेड़ों की लकड़ी न मिले तो आक तक से भी काम किया जाता है।

इन पेड़ों के लड्डे नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फँसा कर सीधे खड़े किए जाते हैं। फिर इन्हें खीप की रस्सी से बाँधा जाता है। यह बाँधाई भी कुंडली का आकार लेती है। इसलिए इसे 'साँपणी' भी कहते हैं। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही सारा काम रुक जाता है और इस क्षण नीचे धार लग जाती है। चेजारो ऊपर

आ जाते हैं और कुई बनाने का काम पूरा हो जाता है।

3. 'चेजारो' किन्हें कहा जाता है? इनके द्वारा तैयार की गई कुई और कुएँ में समानता और असमानता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- चेजारो का ही दूसरा नाम चेलवांजी है। ये लोग कुई की खुदाई और एक विशेष तरह की चिनाई करने वाले दक्षतम लोग हैं। चेजारो जिस कुई को बनाते हैं, वह कुएँ की अपेक्षा व्यास में छोटी होती है परंतु गहराई में कुएँ के समान ही होती है। कुई एक अन्य रूप में कुएँ से अलग होती है। कुएँ से तो पाताल जल यानी भूमिगत जल प्राप्त किया जाता है जबकि कुई से भूमि में एकत्रित वर्षा जल प्राप्त किया जाता है। भूजल मिलते ही कुएँ का निर्माण पूरा हो जाता है परंतु कुई भूमिजल से उस तरह नहीं जुड़ती, जिस तरह कुआँ जुड़ता है। वर्षा होने अथवा न होने की दशा में कुई वर्षा के जल को अत्यंत विचित्र ढंग से समेटती है। इसमें न तो सतह पर बहने वाला जल होता है और न सतह पर एकत्रित भूजल। इसमें पानी के एकत्र होने का मामला कुछ पेचीदा ही है। कुई बनाने के लिए खड़िया पट्टी का होना अतिआवश्यक है जो केवल भूगर्भशास्त्री ही बता सकते हैं जबकि, कुएँ के लिए यह जरूरी नहीं है। कुई मीठे पानी का संग्रह स्थल होता है जबकि कुआँ प्रायः खारे पानी का स्रोत होता है। इस तरह कुएँ और कुई में कुछ समानता है तो ढेर सारी असमानताएँ भी होती हैं।